आधाफुल के कारनामों की और भी हैं कहानियां।

सारी पढ़ डालो, एक भी कहानी छूट न जाए।

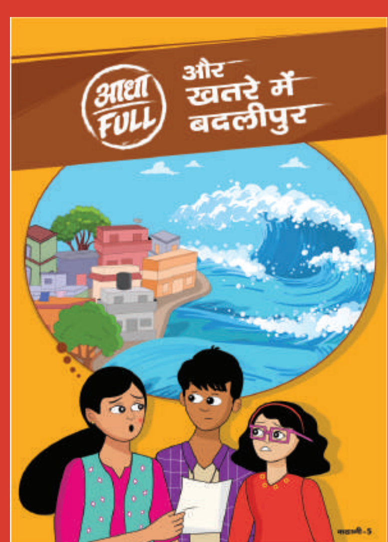

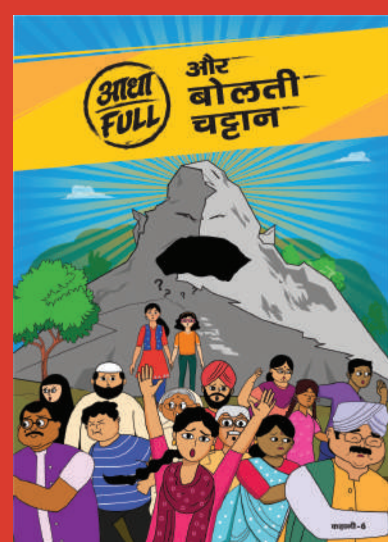

Developed and created by **BBC Media Action**
with support from **UNICEF, DOVE** and **the Centre for Appearance Research**

आधा FULL और खजाने का नक्शा

बदलीपुर की "टीम आधाफ़ुल"

- नाम : किट्टी
- उम्र : 16 साल
- कक्षा : ग्यारहवीं
- गुण : जोश भी है और होश भी
- *किट्टी के लिए कुछ भी इंपोसिबल नहीं

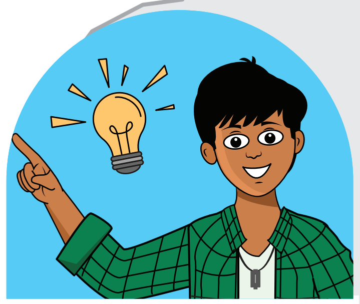

- नाम : अदरक
- उम्र : 15 साल
- कक्षा : सातवीं के बाद स्कूल छोड़ दिया
- गुण : एक नंबर का जुगाड़ू
- *अदरक के पास तरकीब की भरमार है।

- नाम : तारा
- उम्र : 12 साल
- कक्षा : सातवीं
- गुण : जानकारी की चलती फिरती किताब
- *तारा कभी झूठ नहीं बोलती

तीनों बदलीपुर में रहते हैं। तीनों को जासूसी करने का बड़ा शौक है। बदलीपुर में कुछ भी होता है तो तीनों पहुँच जाते हैं केस को सुलझाने। इन तीनो ने मिलकर एक टीम बनाई है जिसका नाम है, आधाफ़ुल।

ये तो किसी खज़ाने का नक्शा लग रहा है!
शायद मुझे पता है!
तबड़ीक
तबड़ीक
मैंने एक बार एक किताब पढ़ी थी, बदलीपुर का इतिहास। उसमें लिखा था कि कई साल पहले कुछ डाकुओं ने एक सेठ को लूटा। फिर सारा धन लूट कर कहीं छुपा दिया था। कहीं भूल न जाएं इसलिए उसका एक नक्शा बना दिया था। हो सकता है ये वही हो।

तारा, अब आएगा मज़ा। हम सब मिलकर खज़ाना ढूंढेंगे।
याहू!
पर मैं तुम्हारे साथ नहीं आ सकती।
सीमा क्या तुम्हें जोश भरे, साहस वाले कामों में मज़ा नहीं आता?
ऐसी बात नहीं है अदरक! मम्मी मना करती है घर से बाहर जाकर उछल कूद करने से। मम्मी कहती है, लड़कियों को घर में ही रहना चाहिए। सिलाई, खाना बनाना जैसे काम ही करने चाहिए।
सीमा, कितनी बार कहा है लड़कों की तरह बाहर खेलने मत जाया करो। लड़कियां घर में रह कर सिलाई सीखती हैं।
खाना बनाना सीखो!

जेंडर का मतलब उस सामाजिक व्यवस्था से है जिसमें आप लड़के हैं या लड़की, इस आधार पर तय किया जाता है कि आपको कैसा दिखना चाहिए, कैसा चाल-चलन होना चाहिए, कैसा बर्ताव करना चाहिए और क्या क्या काम करने चाहिए। आपसे क्या अपेक्षाएं रखी जाएंगी, आपके क्या कर्तव्य होंगे और किस तरह के अधिकार और साधन आपको दिये जाएंगे, यह भी इस बात पर निर्भर करता है कि आप लड़का हैं या लड़की। ये नियम लड़के और लड़कियों की शारीरिक क्षमता के अनुसार नहीं, बल्कि बरसों से चली आ रही रूढ़ीवादी सोच के आधार पर बनाये जाते हैं।

स्टीरियोटाइप का मतलब है, समाज एक मानक तय करता है और फिर सबको उन्हीं मानकों पर चलने के लिए मजबूर करता है। जैसे सब लड़कियां घर की देखभाल करेंगी और सब लड़के पैसे कमाएंगे।

लेकिन लड़के जो कर सकते हैं लड़कियां भी कर सकती हैं। तुम लड़कों की तरह दोनों पांवो से चल सकती हो?
हां, चल सकती हूं।
तो जब चल सकती हो, तो दौड़ भी सकती हो। फिर भी लड़कियों को मना करते हैं बाहर दौड़ने से।
सीमा सोच में पड़ जाती है।
यही सब जेंडर स्टीरियोटाइप है।

आप अदरक को देखो। वही हाथ-पांव। वही दिल, वही दिमाग। फिर भी टोकाटाकी।
बात तो सही है। फिर मम्मी क्यों मना करती है?
कहा ना जेंडर स्टीरियोटाइप के कारण। जब तुम्हारी मम्मी छोटी थी तो उनको भी यही कहा गया होगा कि लड़की हो तो बस घर का काम करो, बाहर मत जाओ, मत खेलो। अब वही बातें वो तुमसे कह रही हैं।
चलो जेंडर स्टीरियोटाइप तोड़ देते हैं।
जेंडर
स्टीरियोटाइप
खचाक

अब हम मिलकर खज़ाना ढूंढेंगे।
किट्टी, मैं समझ गई।
ये नक्शा तो जंगल वाले खंडहर की तरफ जाता है।
N
W
E
S

चारों जंगल में आगे की तरफ बढ़ते हैं। थोड़ी दूर चलने के बाद सामने एक गहरी खाई आती है।
अब हम इस खाई को पार कैसे करेंगे?
हमारे पास तो रस्सी भी नहीं है।
मेरे पास एक तरकीब है।

तरकीब!
किट्टी, बताओ
कैसे पार करेंगे?
इन जड़ों से
लटक कर!!!
याहू!
सर्रर्रर्र
एक-एक कर चारों लटक कर खाई को पार कर लेते हैं।
वाह! क्या
तरकीबें हैं
तुम्हारे पास।

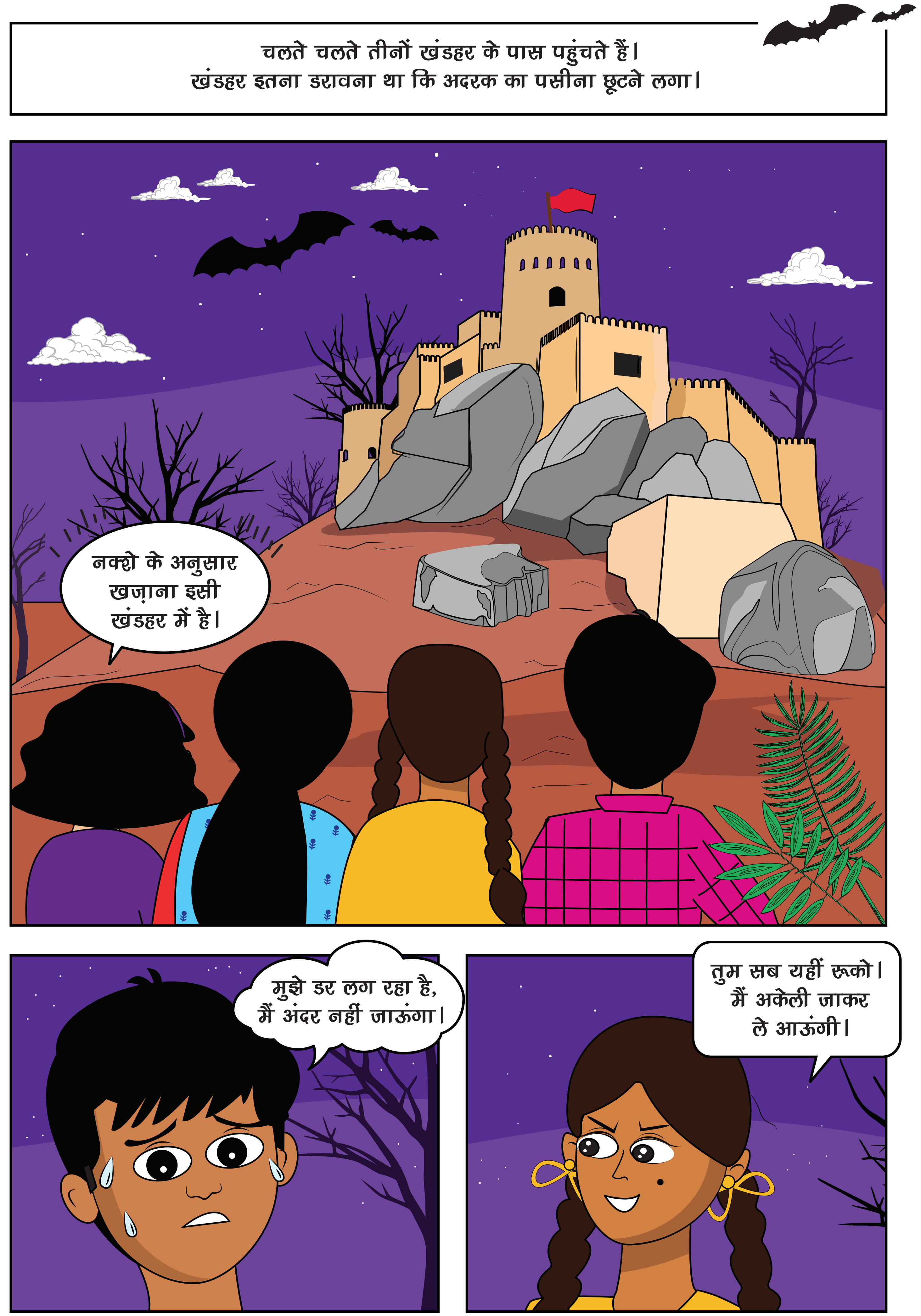
चलते चलते तीनों खंडहर के पास पहुंचते हैं।
खंडहर इतना डरावना था कि अदरक का पसीना छूटने लगा।
नक्शे के अनुसार
खज़ाना इसी
खंडहर में है।
मुझे डर लग रहा है,
मैं अंदर नहीं जाऊंगा।
तुम सब यहीं रूको।
मैं अकेली जाकर
ले आऊंगी।

सीमा अंदर जाती है और पत्थर को हटा कर नीचे छुपा खज़ाना ढूंढ लेती है।

सीमा खज़ाना लेकर बाहर आती है तो सब खुशी में झूम उठते हैं।

अगले दिन सारे अख़बारों में सीमा का कारनामा छपता है।
टीवी पर समाचार में भी आता है।

LLDB

लड़का लड़की दोनों बराबर

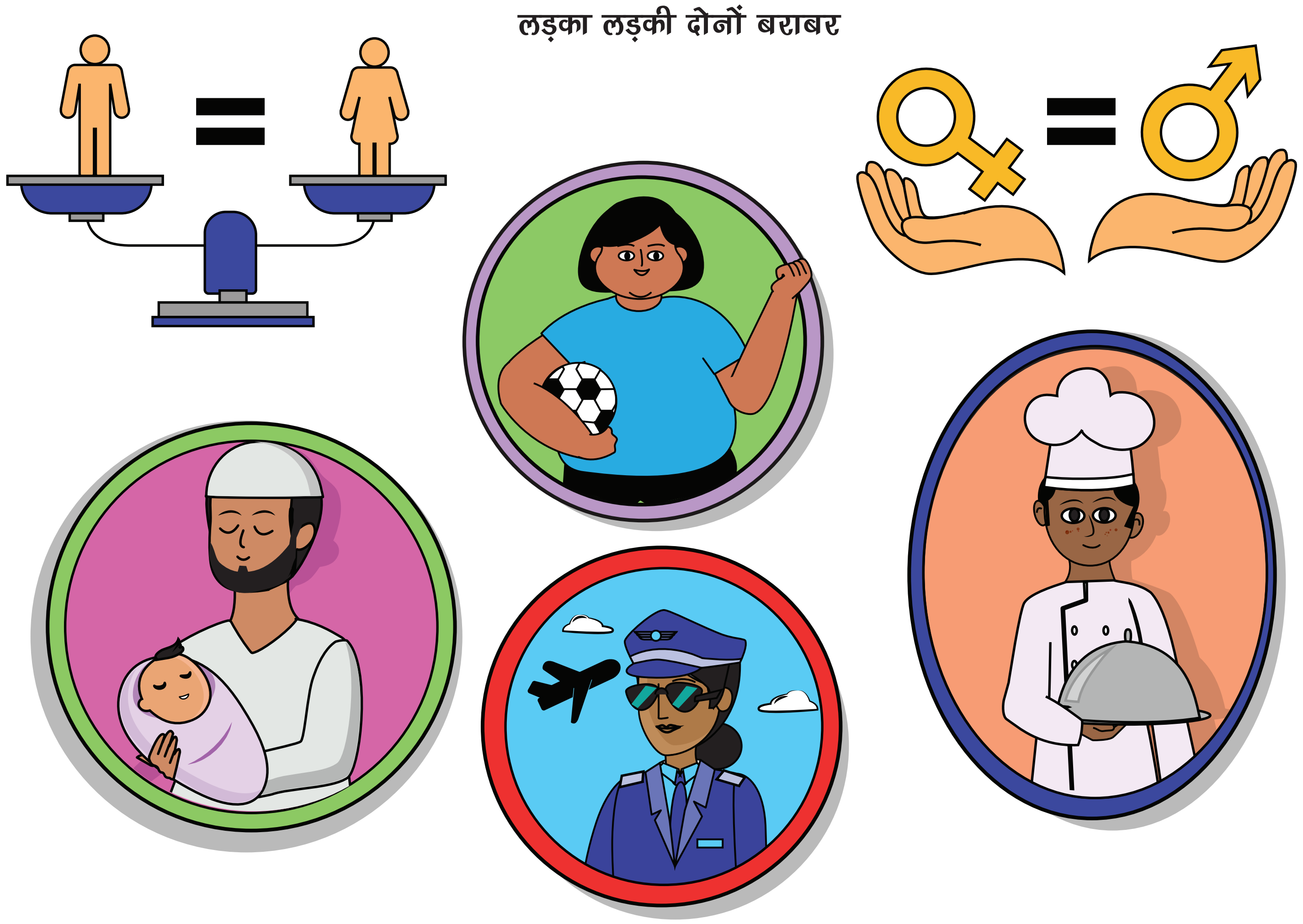

समाप्त

कहानी की सीख

इस कहानी से आपने क्या सीखा?

जब समाज निश्चित करता है कि लड़के और लड़कियां क्या कर और कर नहीं सकते, उन्हें हम स्टीरियोटाइप कहते हैं। ये वर्षों से चले आ रहे हैं और सामाजिक होते हैं।

ये लड़के-लड़कियों दोनों के लिए हानिकारक होते हैं और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने से रोकते हैं। जैसे, इसकी वजह से जिन लड़कों को खाना बनाने का शौक होता है, वो यह सोच कर काम नहीं करते कि खाना तो बस लड़कियों को बनाना चाहिए। और जिन लड़कियों को क्रिकेट खेलने का शौक होता है, वो यह सोचकर यह खेल नहीं खेलतीं कि सिर्फ लड़के इस खेल में आगे बढ़ सकते हैं।

यह ज़रूरी है कि लड़के और लड़कियों दोनों को आगे बढ़ने के समान अवसर दिये जायें।

अवश्य खेलें

थोड़ा सा समय निकालें,
और सोचें कि इस कहानी से आपने क्या सीखा।

-: आपके घर में अधिकतर :-

किसे क्रिकेट खेलने देते हैं? G/B	कौन सुबह देर से उठता है? G/B	कौन खाना पकाने में मदद करता है? G/B	कौन बाज़ार से सामान लाता है? G/B	कौन सब्जियां काटने में मदद करता है? G/B
कौन कपड़े या बर्तन धोता है? G/B	घर में किसकी पसंद का खाना ज्यादा बनाया जाता है? G/B	कौन फर्श साफ़ करता है? G/B	किसे शाम ढलने के बाद बाहर जाने देते हैं? G/B	कौन पानी भरता है? G/B

इच्छा हो तो यह भी खेलें

यह सोचते हुए कि लड़के-लड़कियां दोनों समान होते हैं और जो चाहें वो कर सकते हैं, उसका चित्र बनायें जो आपको लगता है कि उस पेशे को निभा सकता है। (लड़के, लड़की या दोनों)

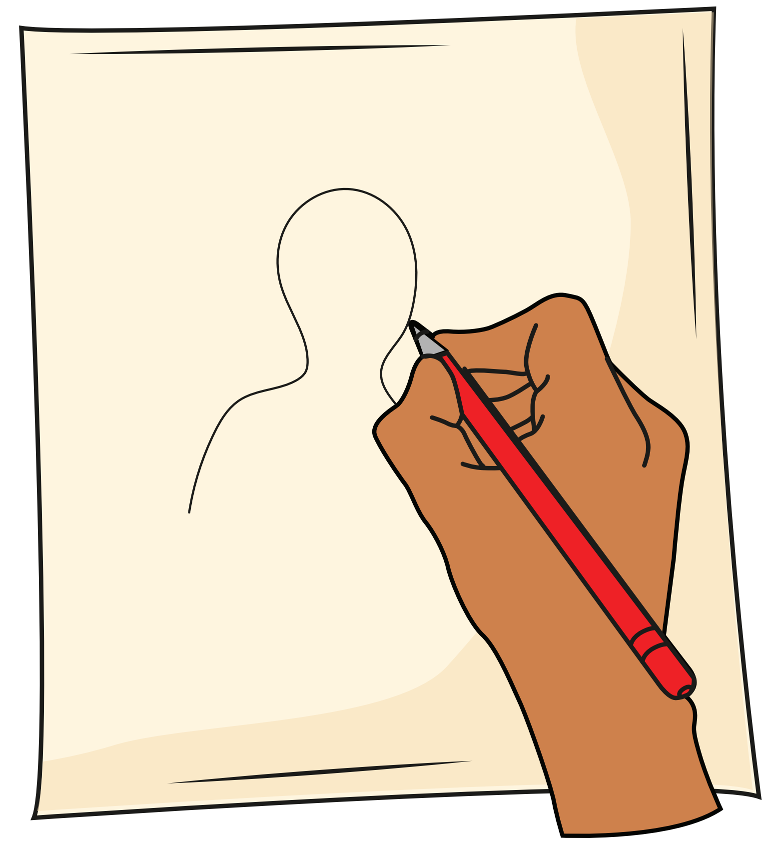

-: निम्नलिखित के चित्र बनाइये :-

- एक डॉक्टर
- एक टीचर
- एक दुकानदार
- एक नर्स

अब अपने चित्र को देखिए। आपने किस पेशे के लिए लड़के का चित्र बनाया है, और किसके लिए लड़की का? और किस पेशे के लिए आपने दोनों का चित्र बनाया है?